7. मेरा जीवन

विधा : - कविता

लेखक:-सुभद्राकुमारी चौहान

शब्दार्थ:-	
१. जीवन	= जिंदगी, జీవితం, Life
२. हँसना	= प्रसन्न होना, నవ్వుట, to laugh
३. रोना	= रुदन करना, ఏడ్చుట, to cry
४. पल	= क्षण, క్షణం, second
५. सोना	= स्वर्ण, कनक, బంగారం, gold
६. पीडा	= तकलीफ, वेदना, బాధ, pain
७. चिंता	= फिक्र, దిగులు, worry
८. जग	= संसार, दुनिया, विश्व, ప్రపంచం, world
९. असार	= सार हीन, సారము లేని, Insubstantial
१०. सागर	= समुद्र, सरित्पति, సముద్రం, the sea
११. उमंग	= आशा, ఆశ, ambition
१२. मतवाला	= नशे में चूर, मस्त, उन्मत, మత్తెక్కిన, intoxicated
१३. वलयित	= लपेटा हुआ, చుట్టబడిన, encircled
१४. सुनहरा	= सोने का रंग का, బంగారపువన్నె గల, golden
१५. साथी	= दोस्त, मित्र, मीत, చెలికాడు, campanion

1. 'मेरा जीवन' कविता की कवयित्री के बारे में आप क्या जानते हैं?

या

कवयित्री श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान जी के बारे में लिखिए ?

ज. 'मेरा जीवन' कविता की कवयित्री 'श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान' जी है। वे हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका है। इनका जीवनकाल सन् 1904 से 1948 है। इनकी प्रमुख रचनाएँ- मुकुल, त्रिधारा हैं। भारतीय डाक सेवा द्वारा इनके चित्र का स्टैंप जारी की गयी है।

2. जीवन में हँसते-बोलते रहना क्यों जरूरी है?

या

कवयित्री ने जीवन में हँसने को क्यों महत्व दिया है ?

ज. मानव जीवन सुख-दुःख से भरा है। हर मानव सुखमय जीवन बिताना चाहता है। हँसते रहने से मन शांत रहता है। हँसने बोलनेवाले के सभी मित्र बनते हैं। इससे मानसिक शांति मिलती है। जीवन सुखमय बन जाता है।

3. खुशहाल जीवन की क्या विशेषता होती है ?

या

'प्रसन्न व्यक्ति कभी दुःखी नहीं होता'। अपने विचार बताइए ?

ज. मानव जीवन सुख-दुःखों का मिश्रण है। हम अपने जीवन को खुशहाल बनाना है। सुखमय जीवन से ही मानव सुखी होता है।प्रसन्न व्यक्ति कभी दुःखी नहीं होता है। हर व्यक्ति अपने कर्तव्यों को पालन कर सुखमय जीवन बिताना हैं।

4. आपको यह संसार कैसे लगता है?

ज. मुझे यह संसार सुखमय लगता है। लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि यह संसार सारहीन है। हम अपने जीवन विश्वास, प्रेम,साहस के साथ बिताना है। इससे जीवन खुशहाल होता है।

5. आपके जीवन को खुशहाल कैसे बनाया जा सकता है?

ज. मैं अपने जीवन को हमेशा हँसते हुए साहस, प्यार, विश्वास आदि के साथ जीता हूँ। इससे सारी समस्याओं का समाधान मिलता है। जीवन खुशहाल बन जाता है।

6. कवयित्री ने जीवन का साथी किसे बताया है और क्यों?

ज. कवयित्री ने जीवन का साथी विश्वास, प्रेम और साहस माना है। इससे जीवन में उत्साह, उल्लास और उमंग भर जाते हैं। जीवन सुखमय बन जाता है। सभी कार्यों में सफलता मिलती है।

सारांश (10 marks)

1. 'मेरा जीवन' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए?

ज. पाठ : मेरा जीवन

कवयित्री : सुभद्रा कुमारी चौहान

जीवनकाल : 1904–1948

रचनाएँ : मुकुल, त्रिधारा

कवयित्री कहती हैं कि – मैं अपने जीवन में केवल हँसना ही सीखा है। मैं रोना या दुःखी होना नहीं जानती हूँ। मेरे जीवन में हमेशा सुख रुपी सोना ही बरसा है। मैं सदा प्रसन्न रहती हूँ।

मैं सुनती हूँ कि यह संसार सारहीन है। लेकिन वह तो मुझे सार ही दिखता है। मेरी आँखों के सामने हमेशा सुख सागर लहराता है। मेरे जीवन में हमेशा उत्साह और उमंग ही रहे। मेरा मन हमेशा विजय की खुशी में हँसता रहा।

मानव जीवन में आशा का महत्वपूर्ण स्थान है। आशा ही मानव को लक्ष्य साधन की ओर आगे बढने की प्रेरणा देती है। मेरी असफलता रूपी सुनहरे धागे से घेरी है। मेरे चारों ओर सुख रूपी सुनहरे बादल छाये रहते हैं। क्योकि मेरे जीवन के साथी विश्वास, प्रेम और साहस है।

भाषा की बात

1. तत्सम – तद्भव

तत्सम	तद्भव
1. स्वर्ण	सोना
2. अक्षी	ऑख

2. हिंदी अक्षरों में लिखिए।

- **1904** – उन्नीस सौ चार
- **1948** – उन्नीस सौ अडतालीस

3. समास

- ❖ सुखसार – तत्पुरूष समास
- ❖ निरंतर – अव्ययी भाव समास
- ❖ प्रतिक्षण – अव्ययी भाव समास
- ❖ सुख–दुःख – द्वंद्व समास

❖ स्वर्णसूत्र – कर्मधारय समास

❖ माता–पिता – द्वंद्व समास

विलोम शब्दः

1. जीवन X मरण
2. हँसना X रोना
3- सार X असार
4- विश्वास X अविश्वास
5- सफलता X असफलता

उपसर्गः

1. असार – अ
2- असफलता– अ
3- आलोकित – आ
4- प्रतिक्षण– प्रति

प्रत्ययः

1- सफलता – ता
2- आलोकित – इत
3- साथी – ई
4 सामाजिक – इक

वचनः

1. सफलता - सफलताएँ
2. ऑख – ऑखें
3. चिंता – चिंताएँ
4. आशा – आशाएँ
5. क्रिडा – क्रिडाएँ

लिंगः

1. कवि – कवयित्री
2. अध्यापक – अध्यापिका
3. गुरू – गुरुआइन

****